Date - 16-5-2024

हिन्दी साहित्य स्मरण वीथिका 4th सेमेस्टर

साक्षात्कार

हिन्दी में साक्षात्कार एक नवविकसित, महत्वपूर्ण, स्वतंत्र तथा समग्र साहित्य विधा है अन्य विधाओं के भाँति साक्षात्कार भी पाश्चात्य साहित्य की देन है साक्षात्कार शब्द अंग्रेजी के इंटरव्यू (Interview) का प्राप्त है पर्याय है इसके लिए हिन्दी में "भेंटवार्ता साक्षात्कार; बात-चीत, मुलाकात, परिचर्या, संवार्ता" इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। साक्षात्कार में जिज्ञासु व्यक्ति किसी विशिष्ट साहित्यिक, पत्रकार, नेता समाजसेवी, कलाकार अथवा अन्य व्यक्ति से स्वयं भेंट करके प्रश्न वार्ता आदि करता हुआ उसके व्यक्तित्व, जीवन, कृतित्व, विचारों, परिवेश इत्यादि के विषय में सीधे जानकारी प्राप्त करता है।

साक्षात्कार के द्वारा साक्षात्कारों के सम्बंध में जहाँ आलोचकों तथा इतिहास-लेखकों को एक ठोस सामग्री प्राप्त होती है, वहीं एक जिज्ञासु युवा कलाकार की सहज जिज्ञासा भी शांत होती है। साक्षात्कार द्वारा साहित्यकार या महान व्यक्ति के जीवन तथा उसके व्यक्तित्व पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है जिसके कारण इसका ऐतिहासिक महत्व भी बढ़ जाता है। यही कारण है कि साक्षात्कार का विषय सीमित न रहकर व्यापक रूप धारण कर लेता है।

साक्षात्कार में किसी एक व्यक्ति के साथ साक्षात्कार कर उस व्यक्ति के जीवन तथा विचारों को अभिव्यक्त किया जाता है। किसी भी साक्षात्कार के अच्छे या बुरे होने का बहुत-कुछ उत्तरदायित्व साक्षात्कार देनेवाले का भी होता है। किसी भी साक्षात्कार की सफलता या असफलता दोनों व्यक्तियों - इंटरव्यू लेनेवाले और इंटरव्यू देनेवाले के ऊपर निर्भर करती है। अतः इंटरव्यू देनेवाले को पूरी उदारता से अपने

पूर्ण सहयोग के साथ लेखक को इंटरव्यू देना चाहिए और साक्षात्कार - लेखक ने भी लिए गए साक्षात्कार को सरल व प्रांजल भाषा में रोचकता का ध्यान रखते हुए प्रस्तुत करना चाहिए।

Scanned with CamScanner